प्रकाशनार्थ

पटना. 22 अप्रैल. विश्व पृथ्वी दिवस के अवसर पर नई दिल्ली- स्तिथ केंद्र की पर्यावरण, वन और जल वायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा समर्थित ई.आई.ए.सी.पी सेंटर (एनवायरमेंट, इनफार्मेशन, अवेयरनेस एवं कपासिटी बिल्डिंग प्रोग्राम) और जन शिक्षण संस्थान (जे.एस.एस) के संयुक्त तत्वावधान में एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह दोनों सेंटर एशियन डेवलपमेंट रिसर्च इंस्टीट्यूट (आद्री) की इकाईयां हैं|

कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाना तथा विशेषकर महिलाओं को सतत एवं पर्यावरण-अनुकूल जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित करना था। कार्यक्रम की शूरूआत सर्वप्रथम आद्री की ई.आई.ए.सी.पी की ओर से आईटी अधिकारी गुलशन पटेल एवं सूचना अधिकारी मौसम बहार ने की । अपने संबोधन में गुलशन पटेल ने विश्व पृथ्वी दिवस मनाने के उद्देश्य, इसकी पृष्ठभूमि एवं वर्तमान समय में इसकी आवश्यकता पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने बताया कि पर्यावरण संरक्षण आज के समय की सबसे बड़ी जरूरत है और इसके लिए प्रत्येक व्यक्ति को अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी। उन्होंने प्रतिभागियों को जल संरक्षण, ऊर्जा की बचत, एकल-उपयोग प्लास्टिक से परहेज, कचरा पृथक्करण तथा अधिक से अधिक वृक्षारोपण करने के लिए प्रेरित किया।

इस अवसर पर मौसम बहार ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि पर्यावरण संरक्षण के लिए जनजागरूकता अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने बताया कि सही जानकारी और जागरूकता के माध्यम से ही समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है और इस प्रकार के कार्यक्रम इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

इसके पश्चात जन शिक्षण संस्थान की ओर से निदेशक संदीप कुमार ने विश्व पृथ्वी दिवस के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि पृथ्वी हमारे जीवन का आधार है और इसके संरक्षण के लिए सामूहिक प्रयास अनिवार्य है। उन्होंने प्रतिभागियों को अपने दैनिक जीवन में पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार व्यवहार अपनाने के लिए प्रेरित किया।

कार्यक्रम में जे.एस.एस के पंकज कुमार की भी सक्रिय सहभागिता रही। उन्होंने पर्यावरण संरक्षण से जुड़े व्यावहारिक उपायों पर चर्चा करते हुए बताया कि छोटे-छोटे कदम (जैसे पानी की बचत, स्वच्छता बनाए रखना तथा प्लास्टिक का कम उपयोग) हमारे आसपास के पर्यावरण को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं |

कार्यक्रम के दौरान एक संवादात्मक सत्र भी आयोजित किया गया, जिसमें प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया तथा पर्यावरण से जुड़े विषयों पर अपनी जिज्ञासाएं व्यक्त कीं। इस सत्र ने कार्यक्रम को अधिक प्रभावी और सहभागी बना दिया। इस कार्यक्रम में कुल 48 लोगों की सक्रिय सहभागिता रही।

अंत में सभी उपस्थित महिलाओं को पर्यावरण संरक्षण की शपथ दिलाई गई, जिसमें उन्होंने स्वच्छ, हरित एवं सुरक्षित वातावरण बनाए रखने के लिए सक्रिय योगदान देने का संकल्प लिया। यह कार्यक्रम पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ाने एवं सामुदायिक सहभागिता को सशक्त करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल साबित हुआ।

Abhishek Prasad